Concept Note

द्वि- दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

आधुनिक हिन्दी साहित्य और भारतीयता

Modern Hindi literature and Bhartiyata

03 - 04 सितम्बर, 2025

प्रस्तावित संगोष्ठी का परिचय और पृष्ठभूमि

भारतीयता की पहचान का सबसे पुख़्ता आधार है भारतीय भाषाओं में अंकित साहित्य । विभिन्न भारतीय भाषाओं में भिन्न-भिन्न संस्कृतियों, समाजों, समुदायों की चेतना का चित्रण हुआ है जिनमें सांस्कृतिक - धार्मिक अंत:सूत्रता के कारण एक भारतीय स्वर सुनाई पड़ता है । भारतीय भाषाओं की रचनाओं में पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण सर्वत्र एकसूत्रता दिखाई पड़ती है, जो भारतीय मानस की भावात्मक एकता का द्योतक है । डॉ. श्यामाचरण दुबे लिखते हैं "भारतीयता एक मानसिक मनोदशा है। भारतीयता को समझने के लिए भारतीय मानस को समझना जरुरी है। यह एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें अनुसंधान और चिंतन बहुत कम हुआ है।..... किन स्थितियों में और कैसे भारतीय मानस अपनी एकता की अभिव्यक्ति करता है, इसकी गहराई में खोज होनी चाहिए। पर, यह खोज कहां पर हो? निश्चित तौर पर इस खोज का सबसे सहज -सरल और प्रभावी माध्यम साहित्य है ।"

भारतीय सन्दर्भ में आधुनिक काल अंग्रेजों के आगमन के पश्चात्, विशेषकर 1857 की जनक्रांति से माना जाता है। यह नवजागरण का काल था। परन्तु यह यूरोपीय नवजागरण से भिन्न था। भारतीय नवजागरण का मुख्य स्वर था-राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक पुनरूत्थान। इन विषयों पर इस दौर के सभी प्रतिनिधि रचनाकारों ने लेखनी चलाई है। इसके उदाहरण हमें तत्कालीन साहित्य में मिलते हैं। नवजागरण के प्रभावस्वरूप जो जागृति आई उसकी चमक समस्त भारतीय भाषाओं के साहित्य में दिखती है। यह वह दौर था जब साहित्यकार राजदरबारों और सामंतों की चहारदीवारी से निकलकर आम जनता के दुख-दर्द को अभिव्यक्त करने की तरफ प्रेरित हो रहा था। विलायती आक्रमण और अत्याचार से त्रस्त आम भारतीय में अपनी संस्कृति और सभ्यता का बोध नवजागरण का प्रतिफल है। परम्परागत विषयों, रूढ़ियों, भाषा, छंद आदि के बन्धनों को त्यागकर साहित्यकार अपने राष्ट्र और जनभावना को वाणी देने के लिए लालायित थे। हिन्दी में भारतेन्दु, महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिली शरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, महाकवि निराला, राष्ट्रकवि दिनकर से लेकर अज्ञेय, निर्मल वर्मा, विद्यानिवास मिश्र, रमेशचंद्र शाह तक एक पूरी परंपरा अनवरत दिखाई देती है जो भारतीयता के मूल्यों, मानदंडों को सृजित और पोषित करती रही है। साहित्यकारों ने राष्ट्रभक्ति के साथ तद्युगीन सामाजिक समस्याओं, कुरीतियों, रूढ़ियों, शोषण, दुर्दशा आदि को अपना वर्ण्य विषय बनाया।

नवजागरण, स्वातंत्रता आदोलन और राष्ट्रीय चेतना ऐसे मोड़ साबित हुए जिसने समूचे राष्ट्र को एक कर दिया, राष्ट्र की वाणी को एक लक्ष्य और एक स्वर प्रदान किया। पत्र-पत्रिकाओं ने भी इस दौर में महती भूमिका निभाई, जिनका संचालन-सम्पादन अधिकांशतः साहित्यकारों के ही हाथों में था। हिन्दी में कवि वचन सुधा, हरिश्चंद्र चंद्रिका, सरस्वती, चाॅंद, हंस, आज आदि पत्र-पत्रिकाओं ने न सिर्फ स्वाधीनता आंदोलन के स्वर को मुखरित किया अपितु सोई हुई जनभावना को जागृत कर एक नयी क्रांति का बीजवपन किया। भारतेन्दु से लेकर इक्कीसवीं सदी के वर्तमान दौर तक अनेकानेक साहित्यकारों ने अपने सृजनकर्म से राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना को पुनर्जागृत किया, भारतीयता के अवबोध को स्वरबद्ध किया

आधुनिक हिन्दी साहित्य का फलक बहुत व्यापक है। कमोवेश समूचे भारतीय समाज की अनुगूॅंज हिन्दी साहित्य में मिलती है। देश ही नहीं, विदेश तक हिन्दी भारतबोध का सबसे सशक्त भाषाई माध्यम है। और, भारतीय समुदाय जहाॅं भी है वह भारतीयता का प्रबल पक्षधर है, प्रखर प्रवक्ता है। राष्ट्रीय एकता में, भारतीय संस्कृति और मूल्यों के संरक्षण - संवर्धन में, भारतीय मनीषा के

उन्नयन में हिन्दी की अग्रणी भूमिका रही है। प्रस्तावित संगोष्ठी आधुनिक हिन्दी साहित्य में भारतीयता पर केंद्रित होगी, जिसका लक्ष्य होगा भारतवर्ष में चहुॅंदिस फैले और समादृत हिन्दी साहित्य में भारतीय मान-मूल्यों की गवेषणा। विश्व - ग्राम के इस दौर में भारतीयता की पहचान, भारतीय अस्मिता का बोध समय की मांग है। भारतीयता का अवबोध, भारतीय जातीय स्वत्व की पहचान और सांस्कृतिक अक्षुण्णता को बनाए -बचाए रखने के लिए अत्यावश्यक है।

संगोष्ठी के उप विषय -

१) भारतीयता की अवधारणा

२) भारतीय आधुनिकता की संकल्पना और साहित्य

३) साहित्य चिंतन की आधुनिक परंपरा और भारतीयता

४) आधुनिक हिंदी साहित्य में भारतीय जीवन -मूल्य

५) आधुनिक हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता का स्वरूप

६) आधुनिक हिंदी साहित्य में भारतीय सांस्कृतिक अवबोध

७) आधुनिक हिंदी साहित्य में सामाजिक उत्थान की चिंता

८) भारतीय साहित्य दर्शन के आधुनिक संदर्भ

९) भारतीयता के संवाहक हिन्दी साहित्यकार(भारतेन्दु, प्रसाद, निराला, दिनकर, अज्ञेय, विद्यानिवास मिश्र, निर्मल वर्मा, रमेशचंद्र शाह पर केंद्रित)

१०) आधुनिक हिन्दी साहित्य में भारत बोध

संगोष्ठी का लक्ष्य एवं उद्देश्य (Aims & Objectives of Seminar)

1) आधुनिक हिन्दी साहित्य में भारतीय अस्मिता के पोषक तत्वों की पहचान - परख करना।

द) आधुनिक हिन्दी साहित्य में भारतबोध के विविध स्वरों का मूल्यांकन करना।

3) आधुनिक हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्य चेतना का आकलन/विवेचन ।

४) साहित्य दर्शन की परंपरा में भारतीय जीवन - दृष्टि का रेखांकन/उद्घाटन।

५) हिन्दी साहित्य में अंतर्व्याप्त राष्ट्रीय चेतना के विविध स्वरों का गवेषणात्मक अध्ययन।

६) भारतीयता के संवाहक प्रतिनिधि हिन्दी साहित्यकारों के कृतित्व का अनुशीलन।

७) भारतीयता के अधिष्ठान - सांस्कृतिक मूल्यों की परख - पड़ताल ।

८) साथ ही, भारतीयता के पोषक उन पक्षों व तत्वों को रेखांकित / उद्घाटित किया जाएगा जिनसे भारतीय चरित्र का स्वरूप निर्मित होता है और राष्ट्रीय एकात्मता में जिनकी अनिवार्य भूमिका होती है।

९) संगोष्ठी का विषय इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि इसके माध्यम से आधुनिक हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्य चेतना और राष्ट्रीय अस्मिता के विविध पक्षों पर व्यापक विमर्श होगा । यह चर्चा और चिंतन भारतीय राष्ट्रीय चरित्र के अन्वेषण, संवर्धन और उन्नयन की दृष्टि से प्रासंगिक है।

१०) प्रस्तावित संगोष्ठी से भारतीय मूल्य - बोध के उन पहलुओं को रेखांकित किया जा सकेगा जो प्रायः अनछुए या उपेक्षणीय रहे हैं। इससे भारतीय मानस की भावनात्मक एकता और उसे सुदृढ़ करने वाले तत्वों पर शोध और नवाचार को बल मिलेगा।

११) संगोष्ठी की उपादेयता यह है कि इससे समाज में अंतर्व्याप्त भारतीयता, राष्ट्रीयता के अंत:सूत्रों को संवाद का विषय बनाया जा सकेगा। साथ ही, जीवन के सामाजिक , सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक आदि विविध पक्षों को मजबूत करने में साहित्य के प्रदेय का उद्घाटन किया जा सकेगा।

Call for Papers

A limited number of participants will be invited for the Seminar. Those interested in participating should send (preferably by email) an abstract (500 words) of the proposed paper in Hindi only along with their C.V. (One page) directly to Dr. Manoj Pandey, Associate, IIAS, Email: mkprtmnu@gmail.com Mobile: 9595239781 and copy to Shri Prem Chand, Librarian/Academic Resource Officer (AC), Indian institute of Advanced Study, Shimla on his Email : aro@iias.ac.in Tel: 0177-2831385 The last date for submission of abstract (500 words) is till 05th August 2025 at 05:00 PM. The Institute intends to send Invitation letters to selected participants by the 15th August 2025. It is the policy of the Institute to publish the papers not proceedings of the seminars it organizes. Hence, all invited participants will be expected to submit complete papers, hitherto unpublished and original, with citations in place, along with a reference section, to the Academic Resource Officer, Indian Institute of Advanced Study, Shimla– 171005 by 31st August 2025.

The IIAS, Shimla will be glad to extend its hospitality (free hospitality is provided only to the Seminar participant) during the seminar period and is willing to reimburse, if required, rail or air travel expenses from the place of current residence in India, or the port of arrival in India, and back.

Note: Plagiarism is a serious academic offence and the Institute reserves the right to cancel the selection/participation of a candidate found guilty at any stage.

…